

## भारत में महिलाओं की स्थिति

यह एडिटरियल 19/08/2022 को 'हृदिसूतान टाइम्स' में प्रकाशित "Is moral policing the newest deterrent to female labour force participation?" लेख पर आधारित है। इसमें भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति और उनकी कार्यबल भागीदारी के बारे में चर्चा की गई है।

कार्य का रूप एवं सीमा, [राजनीतिक भागीदारी](#), [शिक्षा का स्तर](#), [स्वास्थ्य की स्थिति](#), [नरिणय कारी नकियों में प्रतनिधित्व](#), [संपत्तिक पहुँच](#) आदि कुछ प्रासंगिक संकेतक हैं, जो समाज में व्यक्तिगत सदस्यों की स्थिति को प्रकट करते हैं। हालाँकि समाज के सभी सदस्यों की, विशेष रूप से महिलाओं की उन कारकों तक एकसमान पहुँच नहीं रही है, जो स्थितिके इन संकेतकों का गठन करते हैं।

[प्रतिस्तरात्मक मानदंड](#) भारतीय महिलाओं के शिक्षा एवं रोजगार विकल्पों को—जिनमें शिक्षा प्राप्त करने के विकल्प से लेकर कार्यबल में प्रवेश और कार्य की प्रकृतिक सब शामिल हैं, को सीमित या प्रतबिधित करते हैं।

इस परदृश्य में देश की लगभग आधी आबादी और नागरिकता की हसिसेदार महिलाओं की स्थिति पर वचिर करना प्रासंगिक होगा कविरतमान में [स्वतंत्रता](#), [गरमि](#), [समानता](#) और [प्रतनिधित्व](#) के संघर्ष में वे कहाँ खड़ी हैं।

## महिला सशक्तीकरण के बारे में संवधान क्या कहता है?

- [लैंगिक समानता](#) (gender equality) का सदिधांत भारतीय संवधान में नहिति है।
  - संवधान न केवल महिलाओं को समानता की गारंटी देता है, बल्कि राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव (positive discrimination) के उपाय करने की शक्ति भी प्रदान करता है ताकि उनके संचयी सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक अलाभ की स्थिति को कम किया जा सके।
- महिलाओं को [लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किये जाने](#) ([अनुच्छेद 15](#)) और [वधिके समक्ष समान संरक्षण](#) ([अनुच्छेद 14](#)) का मूल अधिकार प्राप्त है।
- संवधान में प्रतयेक नागरिक के लिये यह मूल कर्तव्य नरिधारित किया गया है कि वह महिलाओं की गरमि के वरिद्ध प्रचलित अपमानजनक प्रथाओं का त्याग करे।

## भारत में वे कौन-से क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओं ने असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन किया है?

- वर्षों से महिलाओं ने समाज के अन्याय और पूर्वाग्रह को झेला है। लेकिन आज बदलते समय के साथ उन्होंने अपनी एक पहचान बना ली है, उन्होंने लैंगिक रूढ़ियों की बेड़ियों को तोड़ दिया है और अपने सपनों एवं लक्ष्यों की प्राप्तिके लिये मजबूती से खड़ी हैं। उदाहरण के लिये हम कुछ महिलाओं और उनकी हाल की उपलब्धियों को देख सकते हैं:
  - [सामाजिक कार्यकर्ता](#):
    - [सधिताई सपकाळ](#)([पदम श्री 2021](#)) – अनाथ बच्चों की परवरशि
  - [पर्यावरणवादि](#):
    - [तुलसी गौड़ा](#)([पदम श्री 2021](#)) – वे 'वन वशिक्कोश' (Encyclopaedia of Forest) पुकारी जाती हैं
  - [रक्षा क्षेत्र](#):
    - [अवनी चतुर्वेदी](#) – एकल रूप से लड़ाकू वमिान (मगि-21 बाइसन) का उड़ान भरने वाली पहली भारतीय महिला
  - [खेल क्षेत्र](#):
    - [मैरी कॉम](#) – ओलंपिक में बॉक्सिंग में मेडल जीतने वाली देश की पहली महिला।
    - [पीवी सधि](#) – दो ओलंपिक पदक (कांस्य- टोक्यो 2020) और (रजत- रियो 2016) जीतने वाली पहली भारतीय महिला।
    - [भारतीय महिला क्रिकेट टीम](#) – फाइनलसिट (सलिवर मेडल), राष्ट्रमंडल खेल 2022
  - [अंतर्राष्ट्रीय संगठन में](#):
    - [गीता गोपीनाथ](#) – अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) में पहली महिला मुख्य अर्थशास्त्री।
  - [अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी](#):

- टेसी थॉमस - 'मसिाइल वुमन ऑफ इंडिया' के रूप में प्रतष्ठित (अगुन-IV मसिाइल परयोजना से संबद्ध)
- शकषा कषेत्र:
  - शकृतला देवी - सबसे तेज मानव संगणना का गनीज वर्ल्ड रकॉर्ड ।
  - शानन ढाका - राषट्रीय रकषा अकादमी प्रवेश परीकषा (NDA का पहला महिला बैच) में AIR 1
  - UPSC सविलि सेवा परीकषा 2021 में शीर्ष 3 अखलि भारतीय रैंक महिला उम्मीदवारों द्वारा हासलि की गई ।

## भारत में महिलाओं से संबंधित चति के वर्तमान कषेत्र

- **पुरुष महिला साकषरता दर में अंतर:** हमारे समाज में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लयि शकषा के अवसर की समानता सुनश्चिति करने के सरकार के प्रयासों के बावजूद भारत में **महिलाओं की साकषरता दर**, वशिष रूप से ग्रामीण कषेत्रों में, अभी भी बदतर है ।
  - ग्रामीण भारत में वदियालय दूर स्थति हैं और सुदृढ़ स्थानीय कानून व्यवस्था के अभाव में बालकियों के लयिस्कूली शकषा के लयि लंबी दूरी की यात्रा करना असुरकषति लगता है ।
  - **कन्या भ्रूण हत्या, दहेज और बाल वविह** जैसी पारंपरिक प्रथाओं ने भी समस्या में योगदान दिया है जहाँ कई परिवारों को बालकियों को शकषति करना आर्थिक रूप से अव्यवहारिक लगता है ।
- **लैंगिक भूमिका के संबंध में रुढ़गिरसतता:** अभी भी भारतीय समाज का एक बड़ा तबका यह मानता है कवित्तीय ज़मिमेदारयिँ नभाने और बाहर जाकर कार्य करने की भूमिका पुरुषों की है ।
  - लैंगिक भूमिका के संबंध में रुढ़गिरसतता ने आमतौर पर महिलाओं के प्रतपूरवाग्रह और भेदभाव को जनम दिया है ।
    - उदाहरण के लयि, महिलाओं को बच्चों के पालन-पोषण संबंधी उनके कार्यों के कारण कर्मयिँ/श्रमकिँ के रूप में कम वशि्वसनीय माना जाता है ।
- **समाजीकरण प्रक्रया में अंतर:** भारत के कई भागों में वशिष रूप से ग्रामीण कषेत्रों में, पुरुषों और महिलाओं के लयि अभी भी समाजीकरण के मानदंड अलग-अलग हैं ।
  - महिलाओं से मृदुभाषी, शांत और चुप रहने की अपेक्षा की जाती है । उनसे नश्चिति तरीके से चलने, बात करने, बैठने और व्यवहार करने की अपेक्षा होती है । इसकी तुलना में पुरुष अपनी इच्छानुसार कैसा भी व्यवहार प्रदर्शति कर सकता है ।
- **वधायिका में महिलाओं का प्रतनिधित्व:** पूरे भारत में वभिन्न वधायी नकियों में महिलाओं का प्रतनिधित्व कम रहा है ।
  - **अंतर-संसदीय संघ (Inter-Parliamentary Union- IPU)** और **संयुक्त राषट्र- महिला (UN Women)** की एक रपिर्ट के अनुसार, संसद में नरिवाचति महिला प्रतनिधियिँ की संख्या के मामले भारत 193 देशों के बीच 148वें स्थान पर था ।
- **सुरकषा संबंधी चति:** भारत में सुरकषा के कषेत्र में नरितर प्रयासों के बावजूद महिलाओं को भ्रूण हत्या, घरेलू हसिा, बलात्कार, तस्करी जबरन वेश्यावृत्त, ऑनर कलिगि, कार्यस्थल पर **यौन उत्पीडन** जैसी वभिन्न स्थतियिँ का सामना करना पड़ता है ।
- **'पीरयिड पॉवर्टी' (Period Poverty):** पीरयिड पॉवर्टी वशि्व के कई देशों, वशिष रूप से भारत में गंभीर चति का वषिय है. पीरयिड पॉवर्टी मासकि धरुम को ठीक से प्रबंधति करने के लयि आवश्यक स्वच्छता उत्पादों, मासकि धरुम शकषा और स्वच्छता एवं साफ़-सफ़ाई सुवधियों तक पहुँच की कमी को इंगति करती है ।
  - वर्ष 2011 में **संयुक्त राषट्र बाल कोष (UNICEF)** द्वारा कयि गए एक अधययन से प्रकट हुआ कभारत में केवल 13% बालकियों को पहले मासकि धरुम से गुज़रने के पूरुव से इसके बारे में पता था ।
- **'गुलास सीलगि':** न केवल भारत में बलकवशि्व भर में महिलाओं को एक सामाजकि बाधा का सामना करना पड़ता है जो उन्हें प्रबंधन कषेत्र में शीर्ष नौकरयिँ तक पदोन्नत होने से रोकता है ।

## महिला सशकतीकरण से संबंधित प्रमुख सरकारी योजनाएँ

- [बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना](#)
- [उज्ज्वला योजना](#)
- [स्वाधार गुह](#)
- [प्रधानमंतरी मातृ वंदना योजना](#)
- [प्रधानमंतरी महिला शकतिकेंद्र योजना](#)
- [वन स्टॉप सेंटर](#)

## आगे की राह

- **शकषा के बेहतर अवसर:** महिलाओं को शकषा देने का अर्थ है पूरे परिवार को शकषा प्रदान करना । महिलाओं में आत्मवशिवास पैदा करने में शकषा अहम भूमिका नभित्ती है ।
  - यह समाज में महिलाओं की स्थतिति को बदलने का भी अवसर देती है । शकषा बेहतर तरीके से नरिणय लेने में सक्षम बनाती है और आत्मवशिवास जगाती है ।
  - बालकियों के लयि शकषा के अधिकार की पुष्टि करने और शैक्षणिक संस्थानों में भेदभाव से मुक्त रहने के उनके अधिकार को सुनश्चिति करने के लयि शकषा नीतको और अधिक समावेशी बनाने की आवश्यकता है ।
    - इसके साथ ही, शकषा नीतको युवाओं और बालकों को लकषति करना चाहयि कबालकियों और महिलाओं के प्रतउनके दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आए ।
- **'स्कलिगि' और 'माइक्रो फाइनेंसगि':** कौशल नरिमाण या स्कलिगि और सूक्ष्म वतितपोषण या माइक्रो फाइनेंसगि से महिलाएँ आर्थिक रूप से स्थरि बन सकती हैं और इस प्रकार वे समाज के दूसरे लोगों पर नरिभर नहीं बनी रहेंगी ।
  - महिलाओं को बाज़ार की मांग के अनुरूप गैर-पारंपरिक कौशल में प्रशकषण देना और महिलाओं के लयि सार्वजनकि एवं नज्जी कषेत्र में वृहत

रोज़गार सृजति करना वित्तीय सशक्तीकरण के लिये महत्त्वपूर्ण है।

- **महिलाओं की सुरक्षा:** देश भर में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये वर्तमान सरकार की पहल और तंत्र के बारे में महिलाओं के बीच जागरूकता बढ़ाने हेतु एक बहु-कषेत्रीय रणनीति तैयार की जानी चाहिये।
  - 'पैनकि बटन', 'नरिभया पुलिस स्कवॉड' महिला सुरक्षा की दृष्टि में कुछ सराहनीय कदम हैं।
  - 'महिलाओं का कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न (नविवरण, परतषिध और परततिष) अधिनियम, 2013' को महिलाओं के लिये सुरक्षित कार्यस्थल सुनिश्चित करने और महिलाओं के स्थिति और अवसर की समानता के अधिकार का सम्मान करने वाले एक सक्षम वातावरण का निर्माण करने के लिये अधिनियमति कयिा गया था।
- **शासन के नमिनतम स्तर पर नरिदषिट कार्य:** शासन में अधिक समावेशिता लाने और भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिये शासन के नमिनतम स्तर पर परयिोजनाओं को तैयार करने, समर्थन करने और बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये:
  - **स्वागतम् नंदनी (कटनी, मध्य प्रदेश):** यह पहल बालिकाओं के जन्म का उत्सव मनाने के उद्देश्य से की गई है।
    - 'लाडली लक्ष्मी योजना' के तहत बेटों के जन्म का जश्न मनाने के लिये एक छोटे से आयोजन के साथ नवजात बच्चियों के माता-पिता को बेबी कटि प्रदान कयिा जाता है।
  - **नन्हे चनिह (पंचकुला, हरयिाणा):** आंगनवाडी कार्यकरताओं (AWWs) द्वारा प्रोत्साहति इस कार्यक्रम के तहत बच्चियों को उनके परिवारों द्वारा स्थानीय आंगनवाडी केंद्रों में लाया जाता है।
    - उनके पैरों के निशान एक चार्ट पेपर पर अंकति कयिे जाते हैं और आंगनवाडी केंद्र की दीवार पर माँ और बच्चियों के नाम के साथ लगाए जाते हैं।
- **शकषिा में प्रोत्साहन:** बालिकाओं के उच्च ड्रॉपआउट दर पर अंकुश के लिये उच्च शकषिा हेतु अपेक्षाकृत उच्च वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करने की आवश्यकता है।
  - शकषिा, सूचना और संचार अभयिानों के माध्यम से समान **बाल लगानुपात** प्राप्त करने में सक्षम होने वाले ग्रामों/जिलों को पुरस्कृत कयिा जाना चाहिये।
  - **ई-गवर्नेंस** पर अतिरिक्त बल दयिा जाना चाहिये ताकि छात्राओं हेतु छात्रवृत्त के लिये केंद्र और वभिनिन राज्य सरकारों द्वारा जारी कयिे जाने वाले परवियय की समयबद्ध जाँच हो सके।
- **ग्रामीण स्तर पर बुनयिादी सुवधियाओं में सुधार:** बुनयिादी ढाँचे में सुधार से घरेलू कार्य का बोझ कम हो सकता है।
  - उदाहरण के लिये, ग्रामीण महिलाओं के घरेलू कार्यों में प्रायः पानी और ईंधन की लकड़ी लाने जैसे कठिन कार्य शामिल होते हैं। पाइप से पेयजल की आपूर्ति और स्वच्छ **प्राकृतिक गैस** (जसिमें सुधार आ भी रहा है) इस भार को कम करेगा।
- **महिला वकषिा से महिला नेतृत्वकारी वकषिा की ओर:** महिलाओं को भारत की प्रगत और वकषिा के वास्तुकार की भूमिका सौंपी जानी चाहिये, बजाय इसके कि वे वकषिा के फल की नषिकरयिे प्राप्तकरता भर बनी रहें।
  - **महिला नेतृत्वकारी वकषिा** का शृंखला प्रभाव नरिविाद है क्योंकि एक शकषिा और सशक्त महिला आने वाली पीढ़ियों के लिये शकषिा और सशक्तीकरण सुनिश्चित करेगी।

**अभ्यास प्रश्न:** भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में कौन-सी बाधाएँ मौजूद हैं? महिला सशक्तीकरण से संबंधित कुछ प्रमुख सरकारी पहलों पर प्रकाश डालें।

## UPSC सविलि सेवा परीकषा, वगित वर्षों के प्रश्न (PYQs)

### प्रारंभिक परीकषा

**प्रश्न:** स्वाधार और स्वयं सदिध महिलाओं के वकषिा के लिये भारत सरकार द्वारा शुरू की गई दो योजनाएँ हैं। उनके बीच अंतर के संबंध में, नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयिे : (2010)

1. स्वयं सदिध उन लोगों के लिये है जो प्राकृतिक आपदाओं या आतंकवाद से बची महिलाओं, जेलों से रहिा महिला केंदरियों, मानसकि रूप से वकृत महिलाओं आदि जैसी कठिन परिस्थितियों में हैं, जबकि स्वाधार स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के समग्र सशक्तीकरण के लिये है।
2. स्वयं सदिध स्थानीय स्व-सरकारी नकियाओं या परतषिटति स्वैच्छकि संगठनों के माध्यम से कार्यानवति कयिा जाता है जबकि स्वाधार राज्यों में स्थापति आईसीडीएस इकाइयों के माध्यम से कार्यानवति कयिा जाता है।

**उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?**

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

**उत्तर: (d)**

### मुख्य परीकषा

**प्रश्न 1:** "महिलाओं का सशक्तीकरण जनसंख्या वृद्धि को नरिंत्रति करने की कुंजी है।" वचिना कीजयिे। (2019)

**प्रश्न 2:** भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की चर्चा कीजिये? (2015)

**प्रश्न 3:** महिला संगठन को लैंगिक पूर्वाग्रह से मुक्त बनाने के लिये पुरुष सदस्यता को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। टिपिणी कीजिये। (2013)

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/status-of-women-in-india>

